

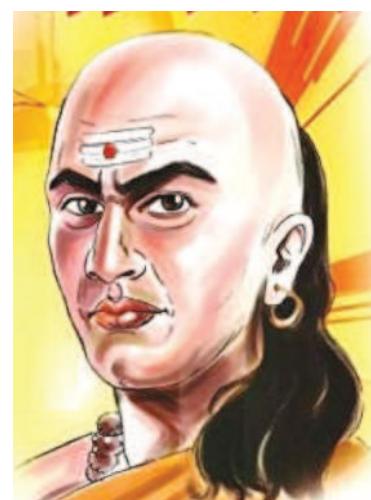


भगवान विष्णु के रक्त से जन्मी हैं मोक्षदायनी मां शिप्रा नदी

मोक्षदायनी नदी शिप्रा नदी का काफी पौराणिक महत्व है। यह मध्य प्रदेश की धार्मिक और ऐतिहासिक नगरी उज्जैन से होकर गुजरती है। उज्जैन की शिप्रा नदी, जहां हर 12 वर्ष बाद सिंहस्थ कुंभ का आयोजन किया जाता है। कुंभ विश्व का सबसे बड़ा मेला है। एक किंवदंती के अनुसार शिप्रा नदी विष्णु जी के रक्त से उत्पन्न हुई थी।
ब्रह्मपुराण में भी शिप्रा नदी का उल्लेख मिलता है। संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपने काव्य ग्रंथ 'मेघदूत' में शिप्रा का प्रयोग किया है, जिसमें इसे अर्वांत राज्य की प्रधान नदी कहा गया है। महाकाल की नगरी उज्जैन, शिप्रा के तट पर बसी है। स्कंद पुराण में शिप्रा नदी की महिमा लिखी है। पुराण के अनुसार यह नदी अपने उद्गम स्थल बहते हुए चंबल नदी से मिल जाती है। प्राचीन मान्यता है कि प्राचीन समय में इसके तेज बहाव के कारण ही इसका नाम शिप्रा प्रचलित हुआ।
रक्त की धार हो गई शिप्रा नदी में परिवर्तित

शिंगा नदी की उत्तरपत्ति के बारे में एक पौराणिक कथा का उल्लेख, हिंदू धर्मग्रंथों में मिलता है। बहुत समय पहले भगवान् शिव ने ब्रह्म कपाल लेकर, भगवान् विष्णु से भिक्षा मांगने पहुंचे। भगवान् विष्णु ने उन्हें अंगुली दिखाते हुए भिक्षा प्रदान की।

सफलता की सीढ़ियां चढ़ना चाहते हैं
तो याद रखें आचार्य चाणक्य की बातें



बताया है। आचार्य चाणक्य की नीतियां हमेशा मनोबल बढ़ाने का काम करती हैं और जीवन में संघर्ष करके आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। हम यहां कुछ ऐसी ही चाणक्य नीतियों के बारे में बताएंगे, जो आपको जीवन में सफलता पाने के लिए सहायक साबित होंगी। चलिए जानते हैं उनके बारे में-

पछतावा न करें

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि जो समय बीत गया है, उसके लिए कभी पछतावा नहीं करना चाहिए और ही कभी भविष्य के बारे में भी चिंतित होना चाहिए। समझदार व्यक्ति हमेशा अपने वर्तमान फोकस करता है।

शिक्षा- चाणक्य नीति के अनुसार व्यक्ति को शिक्षा से मित्रता रखनी चाहिए। शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा के सामने बल और सुंदरता दोनों ही निरर्थक हैं।

खुद के हालात बदलने का प्रयास करें।

चाणक्य नीति के अनुसार बहुत लोग हालात बदलने का प्रयास नहीं करते हैं। वो सोचते हैं कि जैसा चल रहा है वैसा ही चलने दो, ऐसे लोग कभी भी सफलता की सीढ़ी नहीं चढ़ पाते हैं।
बाबरी के लोगों से ही करें मित्रता
आचार्य चाणक्य कहते हैं कि मित्रता हमेशा बाबरी के लोगों से रखनी

आचार्य चाणक्य कहत है कि भ्रमिता हमेशा बराबरा के लागा स रखना चाहिए, क्योंकि जो लोग आपके बराबर के नहीं होंगे वो हमेशा आपके लिए कष्टदायक होंगे।

दूसरों की गलतियों से सीखना

चाणक्य का कहना है कि व्यक्ति को दूसरों की गलतियों से भी सीख लेनी चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति दूसरों की गलतियों से सबक नहीं लेता, वह

रविवार का दिन सूर्य को समर्पित, उपाय करने से मिलती है अपार सफलता

सनातन धर्म में सप्ताह का प्रत्येक दिन किसी न किसी देवी-देवता की पूजा के लिए खास होता है। इसी कड़ी में रविवार का दिन सूर्यदेव की उपासना के लिए समर्पित है। मान्यता है कि सूर्य देव सभी ग्रहों में सबसे अधिक बलवान होते हैं। यदि कुंडली में सूर्य की स्थिति मजबूत होती है तो वाकी ग्रह भी ठीक रहते हैं। ग्रन्थों के अनुसार हफ्ते भर में सूर्य को दिए जल से कई गुना ज्यादा पुण्य रविवार के दिन सूर्य को अर्पित करने से मिलता है। इस दिन कुछ उपायों को करने से जीवन में सुख-शांति, आरोग्य एवं यश-कीर्ति मिलती है। ज्योतिषशास्त्र में भी कहा गया है कि रविवार के दिन कुछ उपायों की मदद से जीवन की सारी समस्याएं दूर हो जाती हैं। आइए जानते हैं।

नामों का जाप भी करना चाहिए।
ऐसा करने से आयु, आरोग्य, धन
धान्य, क्षेत्र, पुत्र, मित्र, तेज, वीर्य,
यश, कांति, विद्या, वैभव और
सौभाग्य आदि प्राप्त होता है।

मंत्र जप करें

ज्योतिष मान्यता है कि सूर्यदेव को
समर्पित रविवार के दिन कुछ
विशेष मंत्रों का अगर जाप करें तो
जीवन की सभी मनोकामनाएं पूरी
हो सकती हैं।

ॐ घृणिं सूर्यः आदित्यः
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सूर्याय
सहस्रकिरणराय मनोवाञ्छित
फलम्-देहि देहि स्वाहा।

ॐ ऐहि सूर्य सहस्रांशों तेजो
राशे जगत्यते, अनुकंपयेमां
भक्त्या, गृहाणार्थ्य दिवाकरः

ॐ ह्रीं घृणि॑ः सूर्य आदित्यः
क्लीं ॐ
ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः

लाल चंदन, गेहूँ, मसूर की दाल आदि का दान करने से व्यक्ति को नौकरी और व्यापार आदि में तरकी मिलती है, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है। इस उपाय को धन हानि से बचने और स्वास्थ्य लाभ पाने के लिए भी किया जाता है।

सूर्य नारायण के लिए व्रत

शास्त्रों के अनुसार लगातार 1 वर्ष तक हर रविवार ये व्रत करने से हर तरह की शारीरिक पीड़ा से मुक्ति मिलती है। शास्त्रों में लिखा है कि सूर्य का व्रत करने से काया निरागी तो होती ही है, साथ ही अशुभ फल भी शुभ फल में बदल जाते हैं। अगर इस दिन व्रत कथा सुनी जाए तो इससे मनुष्य की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही मान-सम्मान, धन-यश तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति भी होती है। व्रत में नमक का उपयोग न करें।

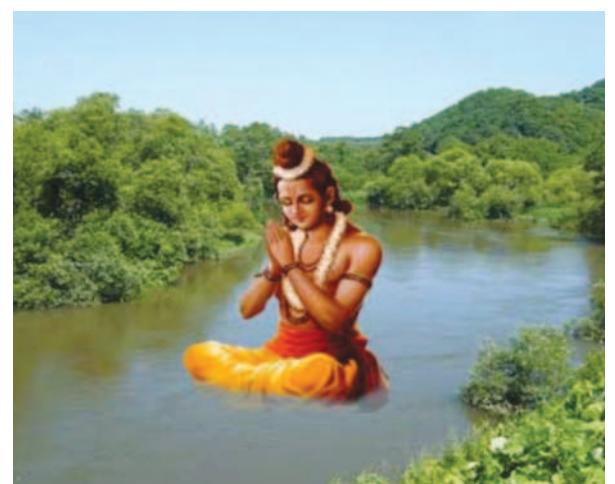
इन रंगों के वस्त्र पहनें

रविवार का दिन सूर्य देव को समर्पित है। सूर्यदेव को लाल, केसरिया, गोल्डन और गुलाबी रंग अति प्रिय हैं। इसलिए इस दिन हल्का नारंगी, गोल्डन, पिंक वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है। इन रंगों के कपड़े पहनने से जीवन में मान-प्रतिष्ठा के साथ-साथ सूर्य देव की अपार कृपा भी प्राप्त होती है। भविष्य पुराण के अनुसार सूर्य पूजा में काले व नीले रंग के वस्त्र नहीं पहनने चाहिए, क्यों कि ऐसे रंग पहनने से पूजा का पूर्ण फल नहीं मिलता है।

जानने और पहचानने के सारे द्वार बंद होते जा रहे हैं

आर्गानाइजेशन, उनका कोई चर्च, उनका कोई संगठन नहीं था। मार्क्स दुनिया में पहला नास्तिक है जिसके पास आर्गानाइजड चर्च है और आधी दुनिया उसके चर्च के भीतर खड़ी हो गई है। और आने वाले पचास वर्षों में बाकी आधी दुनिया भी खड़ी हो जाएगी। आत्मा तो है, लेकिन उसको जानने और पहचानने के सारे द्वार बंद होते जा रहे हैं। जीवन तो है, लेकिन उस जीवन से संबंधित होने की सारी संभावनाएं क्षीण होती जा रही हैं। इसके पहले कि सारे द्वार बंद हो जाएं, जिनमें थोड़ी भी सामर्थ्य और साहस है, उन्हें अपने ऊपर प्रयोग करना चाहिए और चेष्टा करनी चाहिए भीतर जाने की, ताकि वे अनुभव कर सकें। और अगर दुनिया में सौ दो सौ लोग भी भीतर की ज्योति को अनुभव करते हों, तो कोई खतरा नहीं है। करोड़ों लोगों के भीतर का अंधकार भी थोड़े से लोगों की जीवन—ज्योति से दूर हो सकता है और टूट सकता है। एक छोटा—सा दीया और न मालम कितने अंधकार को तोड़ देता है। अगर एक गांव में एक आदमी भी है, जो जानता है कि आत्मा अमर है, तो उस गांव का पूरा वातावरण, उस गांव की पूरी की पूरी हवा, उस गांव की पूरी की पूरी जिंदगी बदल जाएगी। एक छोटा—सा फूल खिलता है और दूर—दूर के रास्तों पर उसकी सुगंध फैल जाती है। एक आदमी भी अगर इस बात को जानता है कि आत्मा अमर है, तो उस एक आदमी का एक गांव में होना पूरे गांव की आत्मा की शुद्धि का कारण बन सकता है। लेकिन हमारे मुल्क में तो कितने साधु हैं और कितने चिल्लाने और शोरगुल मचानेवाले लोग हैं कि आत्मा अमर है। और उनकी इतनी लंबी कतार, इतनी भीड़ और मुल्क का यह नैतिक चरित्र और मुल्क का यह पतन! यह सावित करता है कि यह सब धोखेबाज धंधा है (क्रमशः)

कैसे हुई प्रभु श्री दाम की मृत्यु



श्री राम की मृत्यु से जुड़ी कई कथाएं प्रचलित हैं। पहली कथा के अनुसार जब सीता माता ने अपने दोनों बच्चों लव और कुश को प्रभु श्रीराम को सौंपा और धरती माता में समा गई। माता सीता के जाने से प्रभु श्रीराम बहुत दुखी हो गए। उन्होंने यमराज से सहमति लेकर सरयू नदी में जल समाधि ली।

दूसरी कथा

एक अन्य कथा के अनुसार भगवान राम ने धरती पर 1000 वर्षों से भी ज्यादा समय तक शासन किया। पद्मपुराण के अनुसार भगवान राम जब अपना अवतारकाल समाप्त करके एक ऋषि का रूप धारण करके आये तब यमराज भी एक ऋषि के रूप में आए और उन्होंने राम जी से बात करने का आग्रह किया और यह शर्त रखी कि बात करते समय कोई भी बीच में न आए। उस समय प्रभु श्री राम ने भ्राता लक्ष्मण से कहा कि वो एकांत चाहते हैं, इसलिए आप दरवाजे पर खड़े हो जाएं जिससे कोई भी तर प्रवेश न कर सके। इतनी देर में ऋषि दुवाशा वहाँ आ गए और राम जी से मिलने का आग्रह करने लगे। लक्ष्मण जी के मना करने पर भी ऋषि नहीं माने और क्रोधित होकर बात करने लगे। लक्ष्मण जी दुर्वासा के क्रोध से बचने के लिए कमरे में प्रवेश कर गए जहाँ श्री राम वार्तालाप कर रहे थे। ये देखकर श्री राम भी लक्ष्मण पर कुपित हुए और उन्हें मृत्यु दंड न देकर देश निकाला दे दिया। लक्ष्मण जी के लिए वह भी मृत्यु सामान ही था, इसलिए वो सरयू नदी में समा गए और शेषनाग का रूप धारण कर लिया। भाई की जलसमाधि से आहत होकर श्रीराम ने भी जल समाधि का निर्णय लिया। वो सरयू नदी के अंदर गए और भगवान विष्णु का अवतार ले लिया। इस तरह श्रीराम ने मानव शशीर त्याग दिया और बैकंठ धाम चले गए।

अशोक वृक्ष की छाया में हुआ
था साँ सीता के शोक का नाश

अशोक का आशय है शोक रहित अर्थात् जिसको पाकर शोक न हो। यह अपने नाम की भाँति महिलाओं की तमाम व्याधियों का शमन कर शोक को समाप्त करने वाली वनोषधि है। लंका में सीता जी को _____ दी गई थी देवी दंड दी गई देवी देवी देवी देवी देवी

हनुमान जा द्वारा श्री राम का भजा अगूठा व सदश इसा पड़ क नाच मिले थे। कष्ट को नष्ट कर आशाओं को पूरा करने के लिए अशोक पेड़ की पूजा की जाती है।

अशोक पेड़ को हिन्दू तथा बौद्ध पवित्र मानते हैं। बंगाल में अशोक पष्ठी के दिन विवाहित और उपष्ठी देवी की पूजा के बाद दंडी के साथ अशोक

कानून विजयार्थी आरा बचा देखा का गूँजा का बोल देखा का साथ उत्तराका फूल का प्रसाद की भासि सेवन करती है। इस भासि हमारे देश में अशोकाष्टमी का पर्व चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है, जिसमें अशोक पेड़ की पूजा-अर्चना का विधान है। शुभ माने जाने वाले इस पेड़ की डालियों को मांगलिक अवसरों पर दरवाज पर लगाया जाता है।

वैद्यों ने ही नहीं, बल्कि वर्तमान चिकित्साशास्त्र के शोधकर्ताओं शोधकर्ताओं ने भी इसका रासायनिक विश्लेषण करके देखा है कि इसकी छाल में ‘हीमैक्सिलिन’, ‘टैनिन’, ‘कैटेकाल’, ‘केटोस्ट्रेराल’, ‘ग्लाइकोसाइड’, ‘सैपेनिन’, ‘कार्बिनक कैल्शियम’ एवं ‘लौह के यौगिक’ मौजूद रहते हैं पर ‘अल्केलाइड’ और ‘इसैन्थियल आयल’ की तादाद कदमपि नहीं पाई जाती। ‘टैनिन अम्ल’ की वजह से इसकी छाल मजबूत तो होती ही है, यह अधिक तीव्र असर करने वाली होती है। यह मधुर, शीतल, कषाय, हल्का और रुखा होता है। अशोक अस्थि व्याधियों में हितकर होने के साथ ही कृमिनाशक, त्वचा का रंग संवारने वाला, दर्द निवारक, विषशामक, तृष्णाशामक, स्तम्भक, गर्भाशय संकोचक तथा मत्र जनक होता है। यह मलावरोध, अपच, दाह, वात आदि विकार की भी समाप्त करता है।

लङ्कियों को परफेक्ट बहू बनने की ट्रेनिंग

नई दिल्ली, 27 जनवरी (एक्स्प्रेसवल्यूसिव डेस्क)। 'हे महिला, तुम चूँचती से हारने वाली नहीं हो। तुम सबसे शक्ति वाली चुनौती को हरा सकती हो। दुश्मनों और उनकी सेनाओं को हराओ, तुम्हारी वीरता हजार है।'

यज्ञवेद के इस श्लोक का जिक्र झारखंड हाई कोर्ट ने मेटेंस के मामले में किया है।

सुनवाई रुद्र नारायण रथ वर्षेज पियाली राय के केस की थी जिसमें दुमाली के फैमिली कोर्ट के आदेश को चुनौती दी गई थी। फैमिली कोर्ट ने पत्नी के भरण-पोषण के लिए 30,000 और नावालिंग बेटे को 15,000 देने का आदेश दिया था।

हाई कोर्ट के जन्म सुभाष चंद्र ने मनुमृति के श्लोक पढ़े-

'जहा परिवार की महिलाएं दुखी होती हैं वह परिवार जल्द ही नष्ट हो जाता है, लेकिन जहां महिलाएं संतुष्ट रहती हैं, वह परिवार हमेशा फलतापूर्णता है।'

जब ने कहा कि सेवा की सेवा करना बहु तरीके कर्तव्य है, वह अपने पति से अपनी मां को छोड़कर अलग रहने के लिए नहीं कह सकती। महिला का सास और दादी सास की सेवा करना भारत की संस्कृति है। पत्नी को अलग रहने की जिद नहीं करनी चाहिए।

कोर्ट ने संविधान में अनुच्छेद 51-ए के तहत, सास की सेवा को एक नागरिक का मौलिक कर्तव्य

ससुराल ही उसका अपना घर, चलने-फिरने, कपड़े पहनने में अपनी मर्जी बनाती खराब बहू

बताया। साथ ही जज ने संस्कृति और विवासत से भी जोड़ते हुए यह बात रखी।

महिला ने देहज प्रतिष्ठान का आरोप लगाया था जबकि पति का कहना है कि पत्नी उस पर मां और दादी से अलग रहने के दबाव बना रही है। कोर्ट ने पत्नी को गुजारा भता देने से इंकार कर दिया।

जन्म हुआ वह अपना घर नहीं, ससुराल ही अपना घर

झारखंड हाई कोर्ट ने मनुमृति और यज्ञवेद का हवाला दिया, महिला को उसके कर्तव्यों की दुहाई दी।

हकीकत में भी भारत में लङ्कियों को बचपन से यह अन्यास कराया जाता है कि जहां उसका जन्म हुआ है यानी मायक उसका घर नहीं है बल्कि शादी के बाद ससुराल ही उसका असली घर होगा।

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र के रहने वाले संजय श्रीवास्तव की 3 बेटियां हैं। दो बेटियां घर पर हैं तो एक बेटी दिल्ली में पढ़ाई कर रही है। संजय बड़ी बेटी की शादी की तैयारी कर रहे हैं।

संजय की मां 73 साल की उमा कहती है कि हम बचपन में अपने घर और आसपास में देखते आएं कि लड़का खोजना हुई तो उसके लिए लड़का खोजना शुरू हो



जाता।

सयानी का मतलब जब लड़की सलावर सूट पहनने लग जाए। उमा अपनी सहेलियों को याद करती है कि एक-एक कर सबकी से मायक आती हो तो छेड़ती कि तुम्हारी बारी कब है। छेड़ती है तो चुप रहना, सास-ससुराल में पीटा नहीं जाता, मुझ पर कोई लचक नहीं होता।

अब उनकी पोती की शादी हो रही है तो क्या कुछ बला होता है। इस सवाल पर उमा कहती है कि लड़की को अपना घर छोड़ कर जाना ही है। पति का घर ही उसका घर है, उसी घर को सजाना-संवासन है। तब और अब फक्त यह है कि लड़की को थोड़ी आजारी मिल गई है।

ससुराल में कोई दो घाट बोल दो तो चुप रहना, ज्यावान न देना

पटना की रहने वाली जगती सिंह होम में करती है कि अब तो लड़कियों में यूं ही चुपते हुए नहीं चले जाएं या किसी को खेत से चर्चे की साग नहीं चुरा पाएं और ऐसा ही हुआ।

ससुराल गई तो घूंघट में आ

में दो लोगों के अलावा और कौन रहेगा।

जगती की बड़ी बेटी 10वीं में है वो कहती है कि बिहार में महिला प्रधान के पति के बारे में सब जानते हैं, यानी महिला प्रधान के बेटे से क्षमता व स्वतंत्र बने, यही चाहते हैं।

लेकिन स्वतंत्र बनने का मतलब संस्कार छोड़ना नहीं है। मैडम, मुझे इस की सीख में थोड़ी सी भी लचक नहीं होती है।

आज भी मां-बाप एक बिसी-पिटी लड़की के फैक्ट्री बने चलते हैं जो ये कहती है कि कोई दो घात कह दे तो चुप रहना, सास-ससुराल में पीटा नहीं जाता, मुझ पर कोई हाथ नहीं उठाता। हस्ताक्षर करने के लिए उन्हें मेरे पास आना ही पड़ता है।

लेकिन यहां भी समाज के बिलाऊं की सुर्खी के बढ़ते ही यूं किसी काम की नहीं रही। न शादी के लायक, न बचा पैदा करने के लिए।

जल्दी शादी कर लो नहीं तो बचे नहीं होंगे

उत्तर प्रदेश के बलिया की रहने वाली नेहा पिछले 7 सालों से पटना में रखन कॉम्प्यूटर सिंह होम में करती है कि अब तो लड़कियों को पढ़ाया-लिखाया जा रहा है। उम्र 27 साल हो चुकी है। अब उनके पेरेंट्स को भला बुरा कहा जाए, तुम्हें भरपेट खाना नसीब न हो, ऐसी स्थिति में बेटी क्या करे?

उड़ान ही है पर आकाश की सीमा अभी भी बंधी है

दिल्ली यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर अदित्त नारायणी पासवान वतानी है कि अब तो लड़कियों को पढ़ाया-लिखाया जा रहा है। उम्र 27 साल हो चुकी है। अब उनके पेरेंट्स को भला बुरा करने के लिए उड़ान देनी चाहिए।

अब भी लड़की के परों को बांधकर उसे आसामीं दिया जाता है। तब जगती ने टोका कि बेटियां ससुराल चल जाएंगी तो इसी घर

सेवा करें।

दोनों तरफ की उम्मीदों को पूरा करने के लिए ट्रेनिंग होती है।

यायके में लड़की की सीखती है कि उनकी आवाज में बात करनी है, सिर झुकाकर चलना है, खाना पकाना जान ले। ऐसा इसलिए बताया जाता है कि बेटीएक दिन उसे सामने आए बात होती है। उसके सामने उसकी आदर्श मां होती है। मां बार-बार यह याद दिलाती है कि वो भी तो अपना घर छोड़कर आई है।

लड़के के सामने उसका पिता आइडियल होता है।

अच्छी पत्नी कैसे बनें, भोपाल में दी जाती ट्रेनिंग

भोपाल में एक यूनिक स्कूल है मंज संस्कार केंद्र जहां एक आदर्श बहू या पालने होने के सम्बाए जाते हैं।

बैटीक उम्र की बड़ी की सुर्खी के बढ़ते ही यूं किसी काम की नहीं रही। न शादी के लायक, न बचा पैदा करने के लिए।

समाज जाती एवं लङ्कियों घर-आगंग समाजों

साइकेट्रिस्ट डॉ. हर्षल साठे कहते हैं कि समाज लड़के और लड़कियों को आदर्श बहू बनाने के लिए लड़कों की देखभाल करना चाहिए।

लड़कों के बाल लड़के से उम्मीद जाती है कि वह अपने घर-आगंग के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।

लड़कों के बाल लड़के के लिए एक लायक बदला देता है।



सियासत में एक बार फिर वसुंधरा की एंट्री

पीएम मोदी के बाद मुख्यमंत्री से मुलाकात



जयपुर, 27 जनवरी (एजेंसियां)। प्रदेश में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बाद से वसुंधरा राजे की नाराजगी खुलकर सामने आने लगी थी। गोरतलब है कि कैबिनेट ने शपथ ग्रहण समाप्त है से लेकर प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

जयपुर, 27 जनवरी (एजेंसियां)। प्रदेश में भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बाद से वसुंधरा राजे की नाराजगी खुलकर सामने आने लगी थी। गोरतलब है कि कैबिनेट ने शपथ ग्रहण समाप्त है से लेकर प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

जासकता है, जिसे आने की अनुमति प्रधानमंत्री कार्यालय से मिली हो। कुल मिलाकर राजे से उनकी मुलाकात तय थी। इसके बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का वसुंधरा से मिलने पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

जयपुर, 27 जनवरी (एजेंसियां)। चुनाव हासे के बाद भी कांग्रेस की आपसी कलह खत्म नहीं हो रही है। जयपुर शहर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष आरआर तिवारी ने विधानसभा चुनावों में जयपुर के कांग्रेस नेताओं पर भितरात एक कांग्रेस नेता और पार्टी उम्मीदवारों को हराने का आशेप लगाया है।

आरआर तिवारी ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को जयचंद तक कह दिया और इनसे सावधान रहने के बाहर खड़ा नजर आई। यह एक बहेद चौकाने वाली तत्वार्थी थी। खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

जी बातें सोचनी पड़ेगी।

हार और जीत चलती रहती है, सरकार बदलती रहती है। 8 सीटों में से हमरे 2 साथी जीत कर आए। हम 6 साथी हार गए, लेकिन हम दोर नहीं हैं, हम में हमारी ही साथियों ने हराया है। वह

बात आप कान लीलकर सुन लीजिए

हम 6 साथियों को हवामहल में हमारे ही पार्टी के नेताओं को जाकर खरी खोटी सुनाई। गैरतलब है कि आरआर तिवारी खुद हवा महल विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी थे। वे खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

लेकिन जयचंदों से कैसे बचेगे?

हम 6 साथियों को हवामहल में हमारे ही पार्टी के नेताओं को जाकर खरी खोटी सुनाई। गैरतलब है कि आरआर तिवारी खुद हवा महल विधानसभा का चुनाव हो, लोकसभा से उम्मीदवार बनाया था। आरआर तिवारी ने कहा- हम राजदंड में चुनाव हार गए। 18 काम नहीं करते हैं, केवल फोटो खिंचनाने के लिए आते हैं और फोटो

ताकत से उड़े जिताएं। कांग्रेस ने पूर्व जलदाय मंत्री महेश जोशी का टिकट काटकर आरआर तिवारी को हवामहल सीट से उम्मीदवार बनाया था। आरआर तिवारी ने जयचंदों से बचना पड़ेगा। हम राजदंड में चुनाव हो, संगठन की ताकत रहनी चाहिए। तिवारी ने कहा- जयचंद की पार्टी भी दल में हो, वो पार्टी आगे नहीं बढ़ सकती। सत्ता में तो आ जाओगे,

सिंचाकर बड़े नेता बन जाते हैं। मैं मानता हूं कि यह कड़वी बात है। लेकिन सच्चाई है। तीन महीने के बाद जयगढ़ जारी राजधानी में लोकसभा का चुनाव होने वाला है। हम संकल्प ले कि पार्टी जिसको भी टिकट देगी, हम पूरी

आखिरी राजदंड में बालमुकुद आचार्य को बड़ी लोड मिली और वे जीत गए। पूर्व मंत्री महेश जोशी का टिकट काटकर इस सीट पर तिवारी को देने के बाद से खेमेवंदी हो गई थी। इस खेमेवंदी को हार का कारण माना गया। आरआर तिवारी जयपुर शहर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष है, ऐसे में उनका बाबा कांग्रेस संगठन का बयान है। इसे पार्टी में कलह और भितरात को संगठन के स्तर पर स्वीकार करने से जोड़कर देखा जा रहा है। तिवारी जयपुर शहर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष आरआर तिवारी ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को जयचंद तक कह दिया और इनसे सावधान रहने के बाहर खड़ा नजर आई। यह एक बहेद चौकाने वाली तत्वार्थी थी। खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

लेकिन जयचंदों से कैसे बचेगे?

हम सब लोग संकल्प ले कि मेरी

पार्टी में जयचंद जो हमारे ही साथी को चुनाव हो रहवाते हैं, चाहे वह वार्ड का चुनाव हो, चाहे इसका प्रण करना पड़ेगा कि सरकार बने या न बने, संगठन की ताकत रहनी चाहिए।

तिवारी ने कहा- हम राजदंड में चुनाव हार गए। थे। 18 काम नहीं करते हैं, केवल फोटो

खिंचनाने के लिए आते हैं और फोटो

ताकत से उड़े जिताएं।

कांग्रेस ने पूर्व जलदाय मंत्री

महेश जोशी का टिकट काटकर

आरआर तिवारी को हवामहल सीट

से उम्मीदवार बनाया था। आरआर

तिवारी बीजेपी के बालमुकुद

सिंचाकर उम्मीदवार बनाया था। आरआर तिवारी ने जयचंदों से बचना पड़ेगा।

कांग्रेस ने अपनी ही पार्टी के नेताओं की खिंचनाने के बाद जयपुर के जिलाध्यक्ष आरआर तिवारी ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को जयचंद तक कह दिया और इनसे सावधान रहने के बाहर खड़ा नजर आई। यह एक बहेद चौकाने वाली तत्वार्थी थी। खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

लेकिन जयचंदों से कैसे बचेगे?

हम सब लोग संकल्प ले कि मेरी

पार्टी में जयचंद जो हमारे ही साथी को चुनाव हो रहवाते हैं, चाहे वह वार्ड का चुनाव हो, चाहे इसका प्रण करना पड़ेगा कि सरकार बने या न बने, संगठन की ताकत रहनी चाहिए।

तिवारी ने कहा- हम राजदंड में चुनाव हार गए। थे। 18 काम नहीं करते हैं, केवल फोटो

खिंचनाने के लिए आते हैं और फोटो

ताकत से उड़े जिताएं।

कांग्रेस ने पूर्व जलदाय मंत्री

महेश जोशी का टिकट काटकर

आरआर तिवारी को हवामहल सीट

से उम्मीदवार बनाया था। आरआर

तिवारी बीजेपी के बालमुकुद

सिंचाकर उम्मीदवार बनाया था। आरआर तिवारी ने जयचंदों से बचना पड़ेगा।

कांग्रेस ने अपनी ही पार्टी के नेताओं की खिंचनाने के बाद जयपुर के जिलाध्यक्ष आरआर तिवारी ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को जयचंद तक कह दिया और इनसे सावधान रहने के बाहर खड़ा नजर आई। यह एक बहेद चौकाने वाली तत्वार्थी थी। खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

लेकिन जयचंदों से कैसे बचेगे?

हम सब लोग संकल्प ले कि मेरी

पार्टी में जयचंद जो हमारे ही साथी को चुनाव हो रहवाते हैं, चाहे वह वार्ड का चुनाव हो, चाहे इसका प्रण करना पड़ेगा कि सरकार बने या न बने, संगठन की ताकत रहनी चाहिए।

तिवारी ने कहा- हम राजदंड में चुनाव हार गए। थे। 18 काम नहीं करते हैं, केवल फोटो

खिंचनाने के लिए आते हैं और फोटो

ताकत से उड़े जिताएं।

कांग्रेस ने पूर्व जलदाय मंत्री

महेश जोशी का टिकट काटकर

आरआर तिवारी को हवामहल सीट

से उम्मीदवार बनाया था। आरआर

तिवारी बीजेपी के बालमुकुद

सिंचाकर उम्मीदवार बनाया था। आरआर

तिवारी ने जयचंदों से बचना पड़ेगा।

कांग्रेस ने अपनी ही पार्टी के नेताओं की खिंचनाने के बाद जयपुर के जिलाध्यक्ष आरआर तिवारी ने अपनी ही पार्टी के नेताओं को जयचंद तक कह दिया और इनसे सावधान रहने के बाहर खड़ा नजर आई। यह एक बहेद चौकाने वाली तत्वार्थी थी। खासतौर पर तब जब प्रधानमंत्री के भागीदारी कार्यक्रम में पहुंचने तक के किसी भी कार्यक्रम का हिस्सा

लेकिन जयचंदों से कैसे बचेगे?

हम सब लोग संकल्प ले कि मेरी

पार्टी में जयचंद जो हमारे ही साथी को चुनाव हो रहवाते हैं, चाहे वह वार्ड का चुनाव हो, चाहे इसका प्रण करना पड़ेगा कि सरकार बने या न बने, संगठन की ताकत रहनी चाहिए।

तिवारी ने कहा- हम राजदंड में चुन

